

विचार बिन्दु

अपनी नम्रता का गर्व करने से अधिक निंदनीय और कुछ नहीं है। -मारकस औरैलियस

ऐसी पढ़ाई किस काम की?

हाल ही में मुझे राजस्थान के सरकारी विद्यालयों में कक्षा 8 में पढ़ाई जानी वाली अंग्रेजी की पाठ्य पुस्तक देखने का अवसर मिला। इसे पढ़ने के बाद जो आश्चर्य-मिश्रित दुःख मुझे हुआ, वह मैं पाठकों के साथ साझा करना चाहता हूँ। ऐसा मैं इस आशा के साथ कर रहा हूँ कि कोई शिक्षा प्रशासक या शिक्षाविद इस ओर ध्यान देकर आवश्यक कार्यवाही करेंगे, ताकि राजस्थान के राजकीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले बच्चों का बचपन और भविष्य दोनों को खराब होने से बचाया जा सके।

इस विषय पर विवेचन करने से पूर्व इस पुस्तक के एक अध्याय का एक अंश उद्धृत करना उपयुक्त होगा। यह निम्न प्रकार है:-

"He was afraid that it might kick and bleat at right and smell of its mother - He skirted the clearing and pushed his way into the thicket- It was difficult to fight through with his burden- The fawn's legs caught in the bushes and he could not lift his own with freedom- He tried to shield its face from pricking vines- Its head bobbed with his stride - his heart thumped with the marvel of its acceptance of him - He reached the trail and walked as fast as he could until he came to the intersection with the road home- He stopped to rest and set the fawn down on its dangling legs-It wavered on them- It looked that him and bleated"

उपरोक्त पत्र इस किताब की पृष्ठ संख्या 91 से लिया गया है। कई वर्ष शिक्षा विभाग में बिताने के बाद और लगभग 10 वर्षों से शिक्षा से संबंधित मंचों के माध्यम से स्वीच्छक कार्यक्रमों के रूप में अनेक शिक्षकों और विद्यार्थियों से निरंतर संवाद के आधार पर, मैं विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि बच्चों की बात तो छोड़ दीजिए, शिक्षक भी इस प्रकार के एक पैरपाठफ का न तो अनुवाद कर सकते हैं, न इसका अर्थ समझ सकते हैं। इसी कारण मजबूरन उन्हें कई प्रकार की पासबुक का सहारा लेना पड़ता है।

इन परिस्थितियों में एक प्रश्न उठना स्वाभाविक है। हम इस प्रकार की पुस्तकों के माध्यम से राजकीय विद्यालयों के बच्चों को क्या सिखाना और पढ़ाना चाहते हैं? अंग्रेजी भाषा पढ़ाने का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में यह क्षमता उत्पन्न करना है कि वे सही अंग्रेजी लिखना और बोलना सीखें और उसे समझ भी सकें। इस प्रकार की किताबों से उनका अंग्रेजी भाषा के प्रति लगाव होना असंभव है। जिस सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि से राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी आते हैं, वे सामान्यतया निर्धन और वंचित वर्ग के होते हैं। उनके लिए सही हिन्दी लिखना-पढ़ना भी सरल नहीं होता। उनके लिए इस प्रकार की अंग्रेजी की किताबें चलाना पढ़ाना नहीं किस प्रकार की सोच की उपज है? संभवतया ये पुस्तकें बड़े शहरों में रहने वाले तथा विश्वविद्यालयों के लक्ष्य प्रतिष्ठित प्राध्यापकों द्वारा लिखी जाती हैं जो राज्य की धरातल की स्थितियों से अनभिज्ञ होते हैं।

होना तो यह चाहिए कि प्रारंभिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए जो भी पाठ्य पुस्तकें बनाई जाएं वे उनके संदर्भ से जुड़ी हों। तब ही वे उनके लिए उपयुक्त हो सकती हैं। कहा भी गया है कि प्रारंभिक शिक्षा 'जाने से अनजाने' (known to unknown) की ओर ले जाने वाली होनी चाहिए।

उपरोक्त उल्लिखित पुस्तक के अधिकांश पात्र दूसरे देशों के हैं जिनके नाम और घटनाएँ भी हमारे यहां के विद्यार्थियों के लिए निराला अपरिचित हैं। हम प्रारंभ से ही ऐसी अनजानी परिस्थितियों

कोई पाठक चाहे तो अपने आसपास के किसी भी सरकारी विद्यालय के बालक-बालिकाओं के स्तर की तुलना उनकी पुस्तकों से करें तो पाएंगे कि दोनों में किसी भी प्रकार की कोई समानता नहीं है। न केवल बच्चे, अपितु शिक्षक भी जिस प्रकार की पृष्ठभूमि से आते हैं, उन्हीं भी इस प्रकार की किताबें न तो पढ़ी होंगी ना समझी होंगी।

होगा। इन तीनों ही दृष्टि से इस प्रकार की अंग्रेजी की पुस्तक निराला अनुपयुक्त है। आश्चर्य का विषय है कि शिक्षक भी इस प्रकार की पुस्तकों का विशेष नहीं करते और वे इन्हीं पुस्तकों के आधार पर बच्चों को पढ़ाने का काम करते हैं। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक यह है कि सभी बच्चे परीक्षा में अच्छे अंक लाकर अगली कक्षा में प्रवेश पा लेते हैं। यह वास्तव में चमत्कार ही है।

कोई पाठक चाहे तो अपने आसपास के किसी भी सरकारी विद्यालय के बालक-बालिकाओं के स्तर की तुलना उनकी पुस्तकों से करें तो पाएंगे कि दोनों में किसी भी प्रकार की कोई समानता नहीं है। न केवल बच्चे, अपितु शिक्षक भी जिस प्रकार की पृष्ठभूमि से आते हैं, उन्हीं भी इस प्रकार की किताबें न तो पढ़ी होंगी ना समझी होंगी। परिणामस्वरूप, शिक्षक और विद्यार्थी दोनों केवल पास बुक को सहारा बनाकर बच्चों को परीक्षाओं में अच्छे अंकों से पास करा देते हैं। यदि किसी को वास्तविकता पता करनी हो तो गत वर्ष के आठवीं उत्तीर्ण बच्चों की एक निष्पक्ष परीक्षा इस पुस्तक के आधार पर करा ली जाए। निश्चित रूप से लगभग सब अनुत्तीर्ण होंगे। संभवतया अधिकांश बच्चे 20 प्रतिशत अंक भी नहीं ला पाएंगे। इस सारी व्यवस्था से हम आगामी पीढ़ी के साथ घोर अन्याय कर रहे हैं। यही कारण है कि तथाकथित शिक्षित व्यक्ति किसी भी रोजगार के लिए नियोजित नहीं पाए जाते हैं। इस प्रकार की अनुपयुक्त, अप्रासंगिक पुस्तकों के ही कारण बच्चे 'ड्रॉप आउट' भी होते हैं। क्या कारण है कि हम अभी तक अपनी शिक्षा को बाल केंद्रित नहीं बना पाए, जबकि इस दिशा में बड़े-बड़े प्रयोग और अनुसंधान का गाड़ राजस्थान रहा है। इस बारे में दिल्ली सरकार ने जो प्रयास किए हैं वह न केवल सराहनीय हैं अपितु अनुकरणीय भी हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यह पुस्तक अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की नहीं अपितु हिंदी माध्यम के राजकीय विद्यालयों की है।

इसी परिप्रेक्ष्य में हमें सरकारी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के खोलने के औचित्य पर भी विचार करना चाहिए। सरकार ने केवल वाहवाही और सस्ती लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोल तो दिए इस अदृशपूर्ण निर्णय से उन विद्यालयों में पढ़ने वाले बालकों की स्थिति कितनी विकट हो गई है, उस ओर सरकार का कर्तव्य ध्यान नहीं है। वास्तविकता यह है कि अंग्रेजी माध्यम के नए विद्यालय खोलने के स्थान पर सरकार ने पूर्व में संचालित उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों को ही अंग्रेजी माध्यम का घोषित कर दिया। परिणाम स्वरूप उस विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को विद्यालय से निकाल दिया गया और उनके लिए किसी अन्य विद्यालय की व्यवस्था तक नहीं की। ये बालक-बालिका वर्तमान में इधर से उधर भटक रहे हैं और उनकी शिक्षा के बारे में कोई चिंता शिक्षा विभाग अथवा समाज को नहीं है। इसके विपरीत जो बालक-बालिका निजी विद्यालयों में पढ़ रहे थे उन्हीं ने वहां से छोड़कर इन विद्यालयों में प्रवेश लिया है। कुल मिलाकर इसका प्रभाव यह हुआ कि राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले निर्धन परिवारों के बच्चों को मजबूरन किसी निजी विद्यालय में प्रवेश लेना पड़ रहा है। इस प्रकार जो विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा राजकीय विद्यालयों में प्राप्त कर रहे थे, उन्हें बड़ी धनराशि फीस के रूप में निजी विद्यालयों में प्रवेश हेतु देने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

एक और समस्या जो सरकारी विद्यालयों में प्रवेश के लिए आ रही है, वह पुराने विद्यालय से टीसी प्राप्त करने की है। बिना निजी विद्यालयों से टी.सी. लाए उन्हीं राजकीय विद्यालयों में प्रवेश नहीं दिया जा रहा है। जो विद्यार्थी निजी विद्यालयों में पढ़ रहे थे वहां कोरोना के कारण दो वर्ष में कोई पढ़ाई नहीं हुई। अभिभावकों की आय भी इतनी कम हो गई कि वे अब निजी विद्यालयों में नहीं पढ़ा सकते हैं। उन्हीं पुराने निजी विद्यालय से टी.सी. भी नहीं मिल पा रही है क्योंकि उनकी अधिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे कोरोना काल की बकाया फीस जमा करा सकें।

शिक्षा विभाग को तत्काल इस दिशा में ध्यान देकर अदेिश जारी करने चाहिए कि सरकारी विद्यालयों में कोई भी प्रधानाध्यापक किसी भी विद्यार्थी को आयु के आधार पर किसी कक्षा में प्रवेश देने से मना ना करे। यही मंशा शिक्षा का अधिकार कानून के अंतर्गत स्पष्ट रूप से व्यवक्त की गई है। सरकारी विद्यालयों द्वारा प्रवेश के लिए टीसी को अनिवार्यता समाप्त करने की तत्काल आवश्यकता है। ऐसा नहीं होने पर लाखों बच्चे विद्यालय से बाहर हो भटकते रहेंगे।

सरकार के शिक्षा संबंधी नीति निर्धारकों एवं शिक्षाविदों से विनम्र अनुरोध है कि राजस्थान के लगभग 50 प्रतिशत बच्चों के बचपन एवं उनके भविष्य को ध्यान में रखते हुए तत्काल अपनी व्यवस्था में उपरोक्त सुझाव के परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त बदलाव करें। पुस्तकों को प्रारंभिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए बहुत सरल, सहज एवं प्रासंगिक बनाएं। उनके लिए प्रेरितान काम आने वाले विषयों से संबंधित पुस्तकें बनावें, ताकि ना केवल भाषा एवं गणित पर अपनी पकड़ बना सकें अपितु उनके काम आने वाली जानकारीयें इनके माध्यम से प्राप्त कर सकें। इससे वे विश्वशिक्ष के साथ अच्छे नागरिक के रूप में अपना जीवन यापन करने में सक्षम हो सकेंगे।

-अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)



राशिफल

मंगलवार 30 अगस्त, 2022

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, तृतीय तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत् 2079, हस्त नक्षत्र रात्रि 11:49 तक, शुभ योग रात्रि 12:04 तक, गी करण दिन 3:34 तक, चन्द्रमा कन्या राशि में संचार करेगा।

पंडित अनिल शर्मा

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरु-मीन,

शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग रात्रि 11:49 तक है और रात्रि 3:18 से पुनः आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 3:28 से बुधवार दिन 3:23 तक रहेगी। मघा सिंहा में प्रवेश सांय 4:20 पर।

श्रेष्ठ चौबिडिया: चर 9:18 से 10:53 तक, लाभ-अमृत 10:53 से 2:05 तक, शुभ 3:37 से 5:11 तक।

राहुकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:47



मेष

परिवार में चल रहे आरंभिक मतभेद समाप्त होंगे। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।



तुला

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। आज अनर्पल कार्यों में समय खराब हो सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।



वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशवासन प्राप्त होगा। अटक के हट्ट कार्य बचने लगेगे। व्यावसायिक अडचनें दूर होने लगेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बचने लगेगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।



मिथुन

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक प्रशिक्षण बढ़ेगा। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।



धनु

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में अहा अडचनें दूर होने लगेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उर्वरत सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।



कर्क

व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अडचनें दूर होने लगेगी। व्यंग्य और व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बचने लगेगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



मकर

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशवासन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।



सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।



कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। परिवार में खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।



कन्या

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



मीन

परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मैनेजमेंट के सर्वश्रेष्ठ आदि गुरु विघ्नहर्ता देवों के देव विनायक



डॉ. जे.के. गर्ग

गणेशजी की मूर्ति का विसर्जन क्यों किया जाता है?

भाद्र शुक्ल चतुर्थी को गणेशजी की मूर्ति की स्थापना ढोल नगाड़े के साथ घरों में जाती है। भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से अगले 10 दिन के बाद देश के विभिन्न प्रान्तों में गणपति बप्पा मोरिया, मंगल मूर्ति मोरिया, अगले बरस तु जल्दी आना के नारों के साथ गणपति की मूर्ति का विसर्जन हर्षोल्लास के साथ सरोवरों में किया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से अगले 10 दिन तक गणपति को वेद व्यास जी ने भागवत कथा सुनाई थी। गणेश जी की शर्त थी कि महर्षि एक क्षण के लिए भी कथावाचन में विश्राम नलेंगे। यदि वे एक क्षण भी रूके, तो गणेश जी वहीं लिखना छोड़ देंगे। महर्षि ने उनकी बात मान ली और साथ में अपनी भी एक शर्त रख दी कि गणेश जी बिना समझे कुछ ना लिखेंगे। हर पंक्ति लिखने से पहले उन्हें उसका मर्म समझना होगा। गणेश जी ने उनकी बात मान ली। इस कथा को गणपति जी ने अपने दाँत से लिखा था। दस दिन तक लगातार कथा सुनने के बाद वेद व्यास जी ने जब आँखें खोली तो पाया कि लगातार लिखते-लिखते गणेश जी के शरीर का तापमान काफी बढ़ गया है। महर्षि वेद व्यास जी ने गणेश जी को आदेश दिया कि जो तुरंत पास के कुंड में डुबकी लगा कर अपने आप को ठंडा कर लें। अतः इसी मान्यता के अनुसार गणेशजी की मूर्ति का विसर्जन किया जाता है।

हाथ में अंकुश: गणेशजी का अंकुश हमें अपने लक्ष्य की ओर केंद्रित रखता है। हमेशा आगे बढ़ने का पाट पड़ता है। मुन्यु को अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिये सतत प्रयास करते हुवे निरंतर आगे बढ़ना ही होगा। गणेशजी के हाथ में अंकुश हम सभी को भोतिकता से आध्यात्मिकता की तरफ चलने की शिकंशा भी देता है। आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ: निसंविवाद रूप से जीवन में हमेशा जीत उन व्यक्तियों की होती है जो परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को परिवर्तित करके आगे बढ़ते हैं।

चूहे की सवारी: सभी देवी-देवता गणेशजी की बुद्धिमता के कायल हैं, तर्क-वितर्क में हर देवी-देवता गणेशजी से हार जाते थे। प्रत्येक समस्या के मूल में जाकर उसकी मीमांसा एवं विवेचना कर उसका तर्कसंगत हल खोजना उनकी विशेषता है। इसलिए हर एक के मन में यह सवाल उठना लाजमी है कि भगवान गणेशजी ने निकुट माने जाने वाले चूहे (मूषक) को ही अपना वाहन क्यों चुना? इसी सन्दर्भ में यह भी

को हमेशा अपनी भावनाओं पर बुद्धि और विवेक से नियन्त्रण रखना चाहिए। छोटी आँखें: गणेशजी की छोटी-पैनी आँखें हमें सिखाती हैं कि हमें सूक्ष्म एवं तीक्ष्ण दृष्टि वाला बनना चाहिये। सफलता प्राप्ति के लिये आदमी को एकाग्रचित्त बन कर अपना ध्यान हमेशा अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखते हुए अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिए और मन को इधर-उधर भटकने से रोकना चाहिये। बड़ा पेट: विघ्ननाशक गणेश जी का बड़ा पेट हमें सिखाता है कि मनुष्य को अच्छी बुरी सभी बातों-भावों को समान भाव से ग्रहण करना चाहिए, उन्हें समान भाव से लेना चाहिये। दूसरे शब्दों में गणेशजी का बड़ा पेट मनुष्य को उदार आदतों का धनी बनने की सीख देता है। जीवन में कुछ चाहों को पेट में पचा लेना चाहिये। धीर और गम्भीर पुरुषों का समाज में सम्मान होता है।

क्यों सिर्फ माता-पिता के चरणों में ही बसता है समस्त संसार? एक बार देवता अनेकों आपदाओं में धिरे हुए थे, तब वे मदद मांगने भगवान शिव के पास आए। देवताओं की बात सुनकर शिवजी के दोनों पुत्रों कार्तिकेय व गणेशजी ने शिवजी से देवताओं की मदद करने आज्ञा मांगी तब भगवान शिव ने दोनों की परीक्षा लेते हुए कहा कि तुम दोनों में से जो सबसे पहले पृथ्वी की परिक्रमा करके आएगा वही देवताओं की मदद करने जा सकेगा। भगवान शिव के मुख से यह वचन सुनते ही कार्तिकेय तो अपने वाहन मोर पर बैठकर पृथ्वी की परिक्रमा के लिए निकल गए। किन्तु गणेशजी सोच में पड़ गए कि वह चूहे के ऊपर चढ़कर सारी पृथ्वी की परिक्रमा करेंगे तो इस कार्य में उन्हे बहुत समय लग जाएगा। तभी गणेशजी को एक उपाय सुझा। गणेश अपने स्थान से उठें और अपने माता-पिता को सात बार परिक्रमा करके वापस बैठ गए। परिक्रमा करके लौटने पर कार्तिकेय स्वयं को विजता बताने लगे। तब शिवजी ने श्रीगणेश को पृथ्वी की परिक्रमा ना करने का कारण पूछा। तब गणेश ने कहा- माता-पिता के चरणों में ही समस्त लोक हैं। भगवान शिव ने गणेश को विजता घोषित करके कहा कि वास्तविकता में माता-पिता के चरणों में ही समस्त लोक वास करते हैं।

भगवान गणेशजी के 12 स्वरूप महागणेश (श्रीगणेश के इस स्वरूप की पूजा करने से जीवन में आने वाली हर परेशानी का समाधान होता है। द्विज गणपति (गणेश के स्वरूप की व्याख्या की जाए तो उनके दो सिर और चार हाथ होते हैं। एक हाथ में उन्हीं माला, एक में मटके, एक में किताब

और एक में छड़ी पकड़ी है इस स्वरूप में पूजा करने से उत्तम स्वास्थ्य सुख भविष्य मिलता है) हेरंब गणपति (इस स्वरूप में गणेशजी शेर पर सवार रहते हैं और इनके पांच सिर और दस हाथ होते हैं हेरंब गणपति आपके धन और संपत्ति की रक्षा करते हैं) वीर गणपति (यह गणेश जी के पराक्रमी स्वरूप का नाम है, इस स्वरूप में उनकी सोलह भुजाओं में सोलह भिन्न-भिन्न प्रकार के हथियार होते हैं, वीर गणपति महिलाओं को बीमारियों से बचाते हैं।)

करुण विनायगर (अर्ध पद्मासन में बैठे दो हाथ वाले ये गणपति हमारी हर मनोकामना पूर्ण करते हैं और हम पर धन की वर्षा करते हैं)

गणेशनी (गणेशनी अधि-विनायक, भगवान गणेश का प्राचीनतम स्वरूप हैं। इनका सिर हाथी का नहीं वरन एक मनुष्य का ही है ये हमारी मार्ग में आने वाली हर बाधा, हर परेशानी को खत्म करते हैं।)

सिद्धि-बुद्धि गणपति (भगवान गणेश अपने इस स्वरूप में अपनी दोनों पत्नियों के साथ विराजमान हैं। सिद्धि हमें सहेजज्ञान प्रदान करती हैं और बुद्धि हमें व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति करवाती हैं।)

नृत्य गणपति (मनोकामना पूर्ति करने वाले वृक्ष के नीचे नृत्य करते भगवान गणेश जी हैं खुशहाली और पूर्वजों का आशीर्वाद प्रदान करते हैं।)

विघ्नहर्ता (आठ हाथों वाले गणेश जी के इस स्वरूप की पूजा करने से आपकी हर समस्या और हर रुकावट का समाधान होता है)

अलिंग नर्तन गणपति (अपने इस स्वरूप में भगवान गणेश कलिंग नामक सांप के फन के ऊपर नृत्य कर रहे हैं। यह बुराई पर अच्छाई की जीत दर्शाता है।)

समस्या (अपने इस स्वरूप में भगवान गणेश कलिगुण के उन लोगों की सहायता करते हैं जो अपने अच्छे कर्मों के बावजूद, समस्याओं को झेल रहे हैं), और अलिंग नर्तन गणपति (अपने इस स्वरूप में भगवान गणेश कलिंग नामक सांप के फन के ऊपर नृत्य कर रहे हैं। यह बुराई पर अच्छाई की विजय को दर्शाता है।)

31 अगस्त 2022 को देश प्रथम पूज्य भगवान विनायक का जन्मोत्सव हर्ष उल्लास के साथ मना रहा है। बुद्धि-ऋद्धि-सिद्धि सुख सुखास्थ्य सम्पन्नता को देने वाले देव देवों गणपति भगवान के श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

-डॉ. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक
कालेज शिक्षा जयपुर

मंगला आरती के साथ 638वां जग विख्यात बाबा रामदेवरा मेला शुरू

रामदेवरा, (कासं)। रामदेवरा में पंडशमी राजस्थान के सुप्रसिद्ध लोकदेवता बाबा रामदेव की अवसरण तिथि भाद्रवा-शुक्ला द्वितीया के उपलक्ष्य में सोमवार को अलसुबह मंगला आरती के साथ 638 वें रामदेवरा मेले का विधिवत रूप से शुभारम्भ हो गया।

इस अवसर पर बाबा की समाधि के मस्तक पर स्वर्ण मुकुट प्रतिष्ठापन किया गया। जिला कलेक्टर टीना डाबी ने साम्प्रदायिक सदभाव का संदेश देते हुए बाबा की समाधि की विधि विधान से पूजा-अर्चना की एवं यहां आने वाले श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। मंगला आरती के अवसर पर पुजारी पं. कमल किशोर छंगाणी ने अतिथियों से वैदिक मंत्रोच्चार के साथ बाबा रामदेव की समाधि के दूध, दही, शहद, इत्र एवं पंचामृत से अभिषेक करवाया। बाबा की मेवा मिष्ठान एवं मिश्री का भोग लगाया गया। बाबा की समाधि पर नई चढ़ाई का गयी एवं बाबा की भोग आरती की गई। अतिथियों ने बाबा की समाधि पर इत्र एवं प्रसाद चढ़ाया एवं समाधि पर चंद्र हलया तथा बाबा के अग्रहण जोत के दर्शन किए। अतिथियों को बाबा का प्रसाद दिया गया व पवित्र झारी का



रामदेवरा में बाबा रामदेव के मेले के शुभारंभ पर श्रद्धालुओं ने बाबा अर्चना की। फोटो राष्ट्रदूत

जल आचमन करवाया। मंगला आरती के अवसर पर मंदिर के प्रमुख प्रवेश द्वार के खुलते ही बाबा के भक्तजन बाबा के जयकारे लगाते हुए बड़े उत्साह के साथ निज मंदिर में प्रवेश किया। अनेक

श्रद्धालुओं ने बाबा की बीज के अवसर पर अपने ईष्टदेव के दर्शन कर अपने आप को धन्य महसूस किया। श्रद्धालुगण बाबा की अवतरण तिथि भाद्रवासुदी बीज के अवसर पर ईष्ट देव के दर्शन करने के लिये रात्रि में ही बैरीकेटिंग के मध्य डेरा जमाए रखा था। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक भंवरसिंह नाथावत, नगर विकास न्यास जैसलमर की सचिव एवं मेला समन्वयक

के दर्शन करने के लिये रात्रि में ही बैरीकेटिंग के मध्य डेरा जमाए रखा था। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक भंवरसिंह नाथावत, नगर विकास न्यास जैसलमर की सचिव एवं मेला समन्वयक

के दर्शन करने के लिये रात्रि में ही बैरीकेटिंग के मध्य डेरा जमाए रखा था। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक भंवरसिंह नाथावत, नगर विकास न्यास जैसलमर की सचिव एवं मेला समन्वयक

के दर्शन करने के लिये रात्रि में ही बैरीकेटिंग के मध्य डेरा जमाए रखा था। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक भंवरसिंह नाथावत, नगर विकास न्यास जैसलमर की सचिव एवं मेला समन्वयक